फीडबैक (प्रतिक्रिया)

नाम- विष्णुप्रसाद ज्ञानी
पिता का नाम- श्री घनश्याम जी ज्ञानी
ईमेल - vishnuprasadgyani@gmail.com
विषय-शुक्लयजुर्वेद
कक्षा-शास्त्री

विद्यालयस्य परिवेशः - महाविद्यालयास्य वातावरणं सुरम्यं वर्तते। प्रकृतिपरमात्मनोः सामीप्यं सौलभ्येनिहलभ्यं वर्तते। अत्र प्रवेशावसरे चतुर्ण्णां वेदानां श्रूयमाणा ध्वनिः जिज्ञासूनां चित्तं बलादानन्दाब्धौ निलीयते। अत्रत्या छात्राः सदाचारनिष्ठाः स्वाध्यायशीलाश्च वर्तन्ते। अस्य सुविस्तीर्णं क्रीडाङ्गणं, यज्ञशाला, छात्रावासः ,भोजनशाला च चेतः प्रसादनाय अस्ति।
पठन-पाठन व्यवस्था - अत्र शिक्षमाणाः आचार्याः स्व स्व विषये परंगताः कृतभूरिपरिश्रमाः सन्ति। ऐतेषां ज्ञानेन सहस्रशः विद्यार्थिनः उपकृताः अभवन्। अत्र गुरुजनानां सन्निधौ उषित्वा स्नातकाः आत्मनि लौकिकालौकिकमूल्यानां आधानं कुर्वन्ति। महाविद्यालयोऽयं न केवलं क्षेत्रस्य अपितु समग्र पश्चिमभारते सर्वोत्तम शिक्षा केन्द्र रूपेण स्थापितः वर्तते।
गुरुजनैः सह सम्बन्धः - महाविद्यालयीयाः उपाध्यायाः सदैव छात्रहितेरताः सन्ति। छात्रेषु विषय कौशलं संवर्धनाय नित्यनूतन प्रयोगानुसन्धाने निरताः संलग्नाश्च भवन्ति।

स्वाभिमतम्- मन्येऽहं विद्यालयः एवापर कुटुम्बः तस्मिन् राष्ट्रभावना विविधानि कौशलानि च विकसन्ति। साम्प्रतं मम

जीवनेऽपि अध्यापकानामवदानः सर्वोत्कर्षेण वर्तते। तेषां कृते सदैव अनुज्ञः कृतज्ञश्च भविष्यामि। तान् विस्मृत्य नार्हत्वं मयि।

मेरा व्यक्तिगत अनुभव रहा है कि यह महाविद्यालय बहुत ही उत्तम स्तर की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा समाज को उपलब्ध करवा रहा है। स्वर्गीय श्री बद्रीलाल जी पंचोली ने कल्पतरु रूपी वृक्ष के रोपण किया है। अब वह संस्कृत मे भविष्य ढूंढ रहे युवान के लिए फल प्रदान कर रहा है मेरी कोटिशः शुभकामनाएँ महाविद्यालय परिवार को और

वेदपाठी प विष्णुप्रसाद ज्ञानी
मंदसौर
8889138932

श्रीमतीलाडदेवीशर्मापंचोली-आदर्शसंस्कृतमहाविद्यालयः
श्रीमुनिकुलब्रह्मचर्याश्रमवेदसंस्थानम
बरुन्दनी, तह - माण्डलगढ, जिला - भीलवाड़ा (राज.) 311604

प्रतिपुष्टि प्रपत्र (Feedback Form)

१. छात्र/पूर्व छात्र का नाम - गोविन्द शर्मा

२. पिता का नाम - श्रीमान पुष्कर लाल शर्मा

३. घर का पता - मु.पो.- गन्धेर, तह व जिला - प्रतापगढ (राज.)

४. दूरवाणी संख्या - 7426044118

५. कक्षा /उत्तीर्ण कक्षा - आचार्य द्वितीय वर्ष

६. अध्ययन वर्ष/ उत्तीर्ण वर्ष - 2023-24

७. विषय - संस्कृत साहित्य

८. अध्यापन अध्यापक का नाम - डॉ. पंकज कुमार सिंह

९. अध्यापक के साथ सम्बन्ध - पिता - पुत्र

१०. अध्यापक का अध्यापन से किस प्रकार प्रेरित थे ? - अध्यापक का अध्यापन बहुत अच्छा है, जिससे हमे ज्ञान के साथ-साथ अनेक चीजों में प्रेरणा मिलती है।

११. अध्यापक के पढाने की शैली किस प्रकार थी ? - अध्यापक की शैली बहुत रुचिकर व माधुर्यपूर्ण है, अध्यापक छात्रों के स्तर को ध्यान में रखकर व्याख्यान पढाते है। पाठ्यक्रम समय से पूर्ण करवाते है।

१२. महाविद्यालय में पठन-पाठन का परिवेश/वातावरण किस प्रकार है, ५० शब्दों में लिखें - म.वि. का पठन-पाठन बहुत ही अच्छा है, यहां सभी अध्यापक छात्रों के साथ अपनत्व का व्यवहार करते है। जिससे पठन-पाठन को और भी सरलीकरण से पढा जा सकता है।

१३. आप छात्रावास में रहते थे/हैं क्या ? यदि रहते थे/हैं, छात्रावास की व्यवस्था कैसी थी/है ?

१४. महाविद्यालय का पुस्तकालय कैसे है, अपना मन्तव्य दें - महाविद्यालय का पुस्तकालय अध्ययनशील वातावरण से परिपूर्ण हैं, जिसमें बैठकर पढने की उत्तम व्यवस्था है, तथा पुस्तकालयाध्यक्ष का व्यवहार भी उत्तम है।

१५. महाविद्यालय का खेल मैदान के सम्बन्ध में अपना मतामत दें - महाविद्यालय का खेल मैदान बहुत सुन्दर है। तथा यहां खेलने की सभी सुविधा उपलब्ध है

१६. ला.दे.श.आ.सं. महाविद्यालय से आपके जीवन की उपलब्धि क्या रही ५० शब्दों में लिखें
हमारे महाविद्यालय से मेरे जीवन में बहुत सी चीजों में बदलाव हुआ। यहां की साहित्य, व्याकरण, वेद, ज्योतिष, दर्शन की कक्षाओं में नियमित आने से सभी विषयों में पकड़ हुई जिससे हमारे क्षेत्र में रोजगार मिलने में आसानी हुई।

१७. क्या आप संस्कृत में बात कर सकते है या लिख सकते है ?
हां, मैं संस्कृत बोल सकने व पढ सकने में सक्षम हूँ।

१८. वर्तमान कहां पर कार्यरत हैं, क्या संस्कृत पढने के बाद विशेषकर ला.दे.श.आ.सं.

महाविद्यालय में पढने से क्या लाभ हुआ, ५० शब्दो में लिखें ?
मैं वर्तमान में श्रीमुनिकुलब्रह्मचर्याश्रमवेद संस्थान में एक अध्यापक के रूप में कार्यरत हूँ। व महाविद्यालय में पढने की वजह से आज मैं कहीं भी संस्कृत पढा सकता हूँ। मुझमे निर्णय लेने की शक्ति विकसित हुई है व सभी अध्यापकों के व्यवहार से मुझमें भी किस प्रकार का अध्यापक बनना है यह प्रतिभा उत्पन्न हुई है।

गोविन्द शर्मा, आ-2
साहित्य विभाग
[signature] 2024

श्रीमतीलाडदेवीशर्मापंचोली-आदर्शसंस्कृतमहाविद्यालयः
श्रीमुनिकुलब्रह्मचर्याश्रमवेदसंस्थानम्
बरुन्दनी, तह - माण्डलगढ़, जिला - भीलवाड़ा (राज) 311604

प्रतिपुष्टि प्रपत्र (Feedback Form)

१. छात्र/पूर्व छात्र का नाम - हेमलता शर्मा

२. पिता का नाम - लादू लाल शर्मा

३. घर का पता - सदर बाजार, ब्राह्मणों की सरेरी तह. आसींद
जि. भीलवाड़ा (राज.)

४. दूरभाषी संख्या - 9782642349

५. कक्षा /उत्तीर्ण कक्षा - आचार्य द्वितीय वर्ष

६. अध्ययन वर्ष/ उत्तीर्ण वर्ष - 2020 उत्तीर्ण वर्ष - 2022

७. विषय - नव्य - व्याकरण

८. अध्यापन अध्यापक का नाम -
1. श्रीमान वीरेन्द्र जी ठाकुर
2. श्रीमान उमेश जी शुक्ला

९. अध्यापक के साथ सम्बन्ध - मधुर

१०. अध्यापक का अध्यापन से किस प्रकार प्रेरित थे ? -
गरिमापूर्ण नीति से ।

११. अध्यापक के पढ़ाने की शैली किस प्रकार थी ? - प्रभावपूर्ण शैली

१२. महाविद्यालय में पठन-पाठन का परिवेश/वातावरण किस प्रकार है, ५० शब्दों में लिखें –

महाविद्यालय में पठन पाठन का परिवेश अच्छा व सुचारू रूप से नियमित कक्षाएँ सम्पूर्ण होती हैं व छात्रों की पठन से सम्बन्धित समस्याओं का उचित समय पर निवारण करवा कर उनकी जिज्ञासा को और बढ़ाया जाता है।

१३. आप छात्रावास में रहते थे/है क्या ? यदि रहते थे/है, छात्रावास की व्यवस्था कैसी थी/है ?

नहीं

१४. महाविद्यालय का पुस्तकालय कैसा है, अपना मन्तव्य दें –

महाविद्यालय का पुस्तकालय अच्छा है तथा इसमें संस्कृत साहित्य से सम्बन्धित पुस्तकें आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं।

१५. महाविद्यालय का खेल मैदान के सम्बन्ध में अपना मन्तव्य दें –

महाविद्यालय का खेल मैदान में विद्यार्थियों को शैक्षिक गतिविधियों के साथ साथ अतिरिक्त गतिविधियों का आयोजन किया जाता है।

१६. रा.दे.सा.आ.सं. महाविद्यालय से आपके जीवन की उपलब्धि क्या रही ५० शब्दों में लिखें

रा. दे. सा. आ. सं. महाविद्यालय से हमारे जीवन में यह उपलब्धि रही कि मुझे संस्कृत भाषा व उसके साहित्य का अच्छा ज्ञान व उसकी महत्ता ज्ञात हुई।

१७. क्या आप संस्कृत में बात कर सकते हैं या लिख सकते हैं ? हाँ

१८. वर्तमान कहाँ पर कार्यरत है, क्या संस्कृत पढ़ने के बाद विशिष्टतः रा.दे.सा.आ.सं.

महाविद्यालय में पढ़ने से क्या लाभ हुआ, ५० शब्दों में लिखें ?

वर्तमान में RPSC सेकण्ड ग्रेड की तैयारी कर रही हूँ और मुझे संस्कृत अध्ययन में कोई कठिनाई नहीं होती है। महाविद्यालय में पढ़ने से मेरी व्याकरण अच्छी हो गई है।

श्रीमतीलाडदेवीशर्मापंचोली-आदर्शसंस्कृतमहाविद्यालय:
श्रीमुनिकुलब्रह्मचर्याश्रमवेदसंस्थानम्
[illegible], तह - माण्डलगढ़, जिला - भीलवाड़ा (राज) 311604

प्रतिपुष्टि प्रपत्र (Feedback Form)

१. छात्र/पूर्व छात्र का नाम - चंचल जैलिया

२. पिता का नाम - तारा चन्द जैलिया

३. घर का पता - उपरला गियाला, तहसील - देवगढ़
जिला - राजसमन्द

४. दूरवाणी संख्या - 9772280015

५. कक्षा /उत्तीर्ण कक्षा - आचार्य द्वितीय वर्ष

६. अध्ययन वर्ष/ उत्तीर्ण वर्ष - 2022

७. विषय - नव्य - व्याकरण

८. अध्यापन अध्यापक का नाम -
1. श्रीमान वीरेन्द्र जी ठाकुर
२. श्रीमान उमेश जी शुक्ला

९. अध्यापक के साथ सम्बन्ध - मधुर सम्बन्ध

१०. अध्यापक का अध्यापन से किस प्रकार प्रेरित थे ? -
गरिमा पूर्ण तरीके से

११. अध्यापक के पढाने की शैली किस प्रकार थी ? -
प्रभावपूर्ण शैली ।

१२. महाविद्यालय में पठन-पाठन का परिवेश/वातावरण किस प्रकार है, ५० शब्दों में लिखें -
महाविद्यालय में पठन - पाठन का परिवेश बहुत अच्छा है। यहाँ पर सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। छात्रों की पठन से सम्बन्धित समस्याओं का उचित समय पर निवारण करता कर उसकी जिज्ञासा की ओर बढ़ाया जाता है। यहाँ पर विद्यार्थी एक दूसरे के साथ स्वाभाविक व्यवहार करते हैं।

१३. आप छात्रावास में रहते थे/हैं क्या ? यदि रहते थे/हैं, छात्रावास की व्यवस्था कैसी थी/है ?

नहीं

१४. महाविद्यालय का पुस्तकालय कैसे है, अपना मन्तव्य दें -
महाविद्यालय का पुस्तकालय अच्छा है। इसमें संस्कृत साहित्य से सम्बन्धित पुस्तकें उपलब्ध हैं।

१५. महाविद्यालय का खेल मैदान के सम्बन्ध में अपना मतामत दें - खेल मैदान स्वाभाविक है। यहाँ विद्यार्थियों की शैक्षिक गतिविधियों के साथ सह शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है।

१६. रा.दे.रा.आ.सं. महाविद्यालय से आपके जीवन की उपलब्धि क्या रही ५० शब्दों में लिखें
हमारे जीवन में यह उपलब्धि रही है कि मुझे संस्कृत भाषा का ज्ञान हुआ है और उसकी महत्ता का ज्ञान हुआ है।

१७. क्या आप संस्कृत में बात कर सकते हैं या लिख सकते हैं ? लिख सकती हूँ। धाराप्रवाह बोलने की कोशिश कर रही हूँ।

१८. वर्तमान कहां पर कार्यरत हैं, क्या संस्कृत पढने के बाद विशेषकर रा.दे.रा.आ.सं.
महाविद्यालय में पढने से क्या लाभ हुआ, ५० शब्दो में लिखें ? वर्तमान में मैं RPSC सेकण्ड ग्रेड की तैयारी कर रही हूँ। मुझे संस्कृत अध्ययन में कोई कठिनाई नहीं होती है। महाविद्यालय में पढने से मेरी व्याकरण अच्छी हुई है।

चंचल जैलिया

श्रीमतीलाडदेवीशर्मापंचोली-आदर्शसंस्कृतमहाविद्यालयः

श्रीमुनिकुलब्रह्मचर्याश्रमवेदसंस्थानम्

घरुन्दनी, तह - माण्डलगढ़, जिला - भीलवाड़ा (राज) 311604

प्रतिपुष्टि प्रपत्र (Feedback Form)

१. छात्र/पूर्व छात्र का नाम - शुभम शर्मा

२. पिता का नाम - श्री कृष्ण जी शर्मा

३. घर का पता - ग्राम - गुनावद, पो. - बंगरेड़, त. बड़नगर, जिला - उज्जैन (म.प्र.) - 456771

४. दूरवाणी संख्या - 7224004373, 9588956345

५. कक्षा /उत्तीर्ण कक्षा - आचार्य (नव्य-व्याकरण) (2023)

६. अध्ययन वर्ष/ उत्तीर्ण वर्ष - (2020 - 2023

७. विषय - नव्य - व्याकरण

८. अध्यापन अध्यापक का नाम - श्री उमेश जी शुक्ल, श्री विरेन्द्र जी ठाकुर

९. अध्यापक के साथ सम्बन्ध - गुरु - शिष्य (छात्र)

१०. अध्यापक का अध्यापन से किस प्रकार प्रेरित थे ? - अध्यापन, व्यवहारात्मक, सुमार्गदर्शक

११. अध्यापक के पढ़ाने की शैली किस प्रकार थी ? - सुलभ, सुबोधगम्य, आसान व सरलतम भाषा शैली का प्रयोग।

१२. महाविद्यालय में पठन-पाठन का परिवेश/वातावरण किस प्रकार है, ५० शब्दों में लिखें -

महाविद्यालय का वातावरण एक गुरुकुल जैसा है, सभी
मे सहयोगात्मक व बंधुत्व की भावना से रहना व
एक परिवार की तरह ही परस्पर रहते हैं।

१३. आप छात्रावास में रहते थे/हैं क्या ? यदि रहते थे/हैं, छात्रावास की व्यवस्था कैसी थी/है ? - नहीं

१४. महाविद्यालय का पुस्तकालय कैसे है, अपना मन्तव्य दें -

१५. महाविद्यालय का खेल मैदान के सम्बन्ध में अपना मतामत दें -

१६. ला.दे.श.आ.सं. महाविद्यालय से आपके जीवन की उपलब्धि क्या रही ५० शब्दों में लिखें

संस्कृत के क्षेत्र मे अपने जीवन को आसानी से आगे की
राह मिली तथा सभी गुरुजनों का सहयोग भी मिला।

१७. क्या आप संस्कृत में बात कर सकते हैं या लिख सकते हैं ? हाँ

१८. वर्तमान कहां पर कार्यरत हैं, क्या संस्कृत पढने के बाद विशेषकर ला.दे.श.आ.सं.

महाविद्यालय में पढने से क्या लाभ हुआ, ५० शब्दो में लिखें ?

- महाविद्यालय से पढ़कर आगे की राह बहुत आसान हुई,
इतनी कम फीस में इतना ज्ञान कहीं जगह में नहीं।
आगे अभी NET परिक्षा पास करके DAVV में PHD
कर रहे हैं व संस्कृत ही जीवन है।
ऐसा महाविद्यालय पाकर जीवन धन्य हुआ।

प्रतिपुष्टि प्रपत्र (Feedback Form)

१. छात्र/पूर्व छात्र का नाम - ईश्वर लाल शर्मा

२. पिता का नाम - मदन लाल शर्मा

३. घर का पता - ग्रा.पो. गिलुण्ड, तह. रेलमगरा, जिला-राजसमन्द (राजस्थान) P.N. 313207

४. दूरवाणी संख्या - 8769360270

५. कक्षा /उत्तीर्ण कक्षा - शास्त्री, आचार्य

६. अध्ययन वर्ष/ उत्तीर्ण वर्ष - 2018, 2023

७. विषय - हिन्दी साहित्य, भाषा विज्ञान

८. अध्यापन अध्यापक का नाम - डॉ संजय कुमार तिवारी

९. अध्यापक के साथ सम्बन्ध - शिष्यवत् एवं माधुर्य पूर्ण

१०. अध्यापक का अध्यापन से किस प्रकार प्रेरित थे ? - नित्य नवीन भाव एवं विचार जाग्रत होते थे

११. अध्यापक के पढाने की शैली किस प्रकार थी ? - व्याख्या में किसी भी पद, या गद्यांश का विस्तृत भाव प्रकट कर देना तथा सामाजिक जीवन से उदाहरण प्रस्तुत करते रहना आपके पढाने की शैली की विशेषता थी

१२. महाविद्यालय में पठन-पाठन का परिवेश/वातावरण किस प्रकार है, ५० शब्दों में लिखें -

महाविद्यालय का वातावरण पूर्णतया समीचीन नहीं है। अभी और सुधार करने की आवश्यकता है।

१३. आप छात्रावास में रहते थे/हैं क्या ? यदि रहते थे/हैं, छात्रावास की व्यवस्था कैसी थी/है ?

नहीं

१४. महाविद्यालय का पुस्तकालय केसे है, अपना मन्तव्य दें - ठीक है

१५. महाविद्यालय का खेल मैदान के सम्बन्ध में अपना मतामत दें - महाविद्यालय एवं वेदविद्यालय का संयुक्त खेल मैदान है। इसमें दोनो विद्यालय के छात्र सम्मिलित रूप से खेलते हैं।

१६. ला.दे.श.आ.सं. महाविद्यालय से आपके जीवन की उपलब्धि क्या रही ५० शब्दों में लिखें

उपाधि प्राप्ति के साथ-साथ सदैव आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती रही।

१७. क्या आप संस्कृत में बात कर सकते हैं या लिख सकते हैं ? हाँ

१८. वर्तमान कहां पर कार्यरत हैं, क्या संस्कृत पढने के बाद विशेषकर ला.दे.श.आ.सं.

महाविद्यालय में पढने से क्या लाभ हुआ, ५० शब्दो में लिखें ?

श्री मुनिकुल ब्रह्मचर्याश्रम वेद संस्थान, बकन्दनी में सामवेदाध्यापक के पद पर कार्यरत है।

ईश्वरलालशर्मा

प्रतिपुष्टि प्रपत्र (Feedback Form)

१. छात्र/पूर्व छात्र का नाम - नीरज कँवर शक्तावत

२. पिता का नाम - नरपत सिंह

३. घर का पता - झुन्झुनू

४. दूरभाष संख्या - 8107676045

५. कक्षा /उत्तीर्ण कक्षा - शास्त्री द्वितीय वर्ष

६. अध्ययन वर्ष/ उत्तीर्ण वर्ष - 2023-2024

७. विषय - हिन्दी

८. अध्यापन अध्यापक का नाम - डॉ संजय कुमार तिवारी

९. अध्यापक के साथ सम्बन्ध - अच्छा सम्बन्ध

१०. अध्यापक का अध्यापन से किस प्रकार प्रेरित थे ? -
आपके अध्यापन में सरलता के साथ-साथ व्यवहारिक जिवन को उदाहरण के रूप में रख के कठ विषय को समझाते है।

११. अध्यापक के पढाने की शैली किस प्रकार थी ? -
सरल एवं सुबोध शैली रही है.

१२. महाविद्यालय में पठन-पाठन का परिवेश/वातावरण किस प्रकार है, ५० शब्दों में लिखें -

महाविद्यालय का परिवेश अध्ययन अध्यापन के अनुकूल है साथ ही वहाँ सारी ज्ञान प्राप्त होता है।

१३. आप छात्रावास में रहते थे/हैं क्या ? यदि रहते थे/हैं, छात्रावास की व्यवस्था कैसी थी/है ?

नहीं

१४. महाविद्यालय का पुस्तकालय कैसे है, अपना मन्तव्य दें -

महाविद्यालय का पुस्तकालय समृद्ध है तथा सभी पुस्तके उपलब्ध है।

१५. महाविद्यालय का खेल मैदान के सम्बन्ध में अपना मतामत दें -

खेल मैदान विस्तरित है।

१६. का.दे.श.आ.सं. महाविद्यालय से आपके जीवन की उपलब्धि क्या रही ५० शब्दों में लिखें

भाषा के प्रति मुख्यतः हिन्दी एवं संस्कृत प्रति रूचि लगाव उत्पन्न हुआ अपनि संस्कृत एवं सभ्यता से लगाव उत्पन्न हुआ

१७. क्या आप संस्कृत में बात कर सकते हैं या लिख सकते हैं ? हाँ

१८. वर्तमान कहां पर कार्यरत है, क्या संस्कृत पढ़ने के बाद विशेषकर का.दे.श.आ.सं. महाविद्यालय में पढ़ने से क्या लाभ हुआ, ५० शब्दों में लिखें ? अध्ययनरत

महाविद्यालय में पढ़ने से नैतिक आध्यात्मिक जीवन विचार प्राप्त हुए है।